

zuziehen ist). *werfen, schleudern* Çiç. 3, 73. 9, 72. — 2) *ergreifen, packen* Çiç. 7, 21. — 3) *anbinden, befestigen*: संश्रमाकलितोभुका KATHIS. 20, 52. सुवर्णमूत्राकलिताधराम्बरम् Çiç. 1, 6. 9, 45. — 4) *übergeben, übertragen*: स्वं दीपं सप्त वर्षाणि विभज्य सप्तवर्षनामभ्य ध्यात्मज्ञेभ्य ध्याकल्यय्य Buāg. P. 5, 20, 2. — 5) *wahrnehmen, in Betracht ziehen*: ततः पश्चादायातं भयेक्षुमाकल्यय्य मन्थरो जले प्रविष्टः Hit. 38, 10. खिन्नमसूयया हृदयं तवाकलयामि Gtr. 3, 7. ध्यात्मानं च प्रवयसमाकल्यय्य वनं विरक्तः प्रातिष्ठत् Buāg. P. 4, 9, 67. 12, 16. यथा परशुराममाकलयतु भवती तावत् Prab. 5, 5. Sch. zu Ghat. 22. — 6) *für Etwas ansehen, halten* BHARTṚ. 3, 36. 81. — Vgl. आकलन.

— प्रत्या *aufzählen, herzählen*: प्रत्याकलितस्वडुर्नयः DAÇAK. in BENF. Chr. 183, 10. BENF. *vorwerfen, anklagen, verurtheilen*. प्रत्याकलित 1) *interposed*; 2) *introduced, as a step in legal process* WILSON.

— उद् *losbinden, lösen*; उत्कलित *losgemacht, der sich losgemacht hat*: स तस्य हस्तोत्कलितस्तदामुरा विक्रीडतो यददक्षिणामृतः Buāg. P. 7, 8, 26. *eröffnet, aufgeblüht* (u. उत्कलित *fälschlich: mit Knospen bedeckt*): आलिङ्गितस्तिलक उत्कलित ग्रभाति ad KUMĀRAS. 3, 26. प्रहर्षवेगोत्कलितानन Buāg. P. 7, 8, 35. भक्त्युत्कलितामलात्मना Buāg. P. 4, 10, 23. BURNOURF. *avec une intelligence pure et ardente de dévotion*. — Vgl. उत्कलित, उत्कलिका.

— परि 1) *sehen, wahrnehmen* NAISH. 2, 65. अपरिक्लितपूर्व LALITAM. im ÇKDR. — 2) *für Etwas ansehen, halten* Çiç. 8, 9. — परिक्लित gaṇa इष्टादि zu P. 5, 2, 88; davon परिक्लितित्त्वं ebend.

— सम् *aufhäufen* (?): संकलयति कालयति वा भूतानीति कालः Suçr. 1, 18, 20. partic. संकलित (davon संकलितित्त्वं) gaṇa इष्टादि zu P. 5, 2, 88. *aufgehäuft* AK. 3, 2, 42. H. 1483. *addit, n. Addition* LILĀV. im ÇKDR.

— प्रत्यासम् *nach verschiedenen Indicien schliessen*: अनुमानं प्रत्यासंकलितम् VJAVABHĀT. 38, 15.

3. कल्, कालयति *treiben, vor sich her treiben*: गावो न काल्यन्त इदं कुतो रजः Buāg. P. 4, 5, 8. गर्दभान्कालयति P. 8, 1, 59. Sch. गवो शतसहस्राणि त्रिगर्वाः कालयन्ति ते MBh. 4, 1007. 1153. 1158. बालवत्साश्च या गावः कालयामास (*die er zusammentrieb*, WEST.: *numerare*) ता अपि 3, 14853. गावो राष्ट्रस्य कुरुभिः काल्यन्ते नः 4, 1203. गाम् — काशदण्डप्रणुदितो काल्यमानामितस्ततः 1, 6670. सा गोस्तत्सकलं सैन्यं कालयामास हूरतः । विश्रामित्रस्य तत्सैन्यं काल्यमानं त्रियोजनम् 6690. विशीर्यमाणा पृतनाम् — त्रिदशैः काल्यमानामनायवत् Buāg. P. 6, 11, 2. स विजित्य गृहीत्वा च नृपतीन् — प्राच्यान् u. s. w. अकालयत् MBh. 1, 4690. स काल्यमानो घोरेण प्रूलक्ष्तेन रत्नसा । अग्निहोत्रे पितुर्भक्तिः सहसा प्रविवेश ह ॥ 3, 10768. खड्गदण्डं धनुष्यार्शं शैराघनं प्रभुम् । रामकालमकालिनं न कालयितुमर्हसि R. 3, 41, 26. तस्यैतस्य जने नूनं नायं वेदोर्विक्रमम् । काल्यमानो ऽपि बलिनो वायोऽरिच घनावलिः Buāg. P. 3, 30, 1. med.: कालः कालयते सर्वान् R. 4, 18, 28; vgl. काले परिणते कालः कालयिष्यति मामिव MBh. 12, 8252 und Suçr. 1, 19, 1 (s. u. 2. कल् mit सम्). Nach NAISH. 2, 14 und Nin. 2, 25 ist कालयति ein *गतिकर्मन्*; nach Dhātup. 32, 64: *werfen*; nach 33, 13, v. l.: *die Zeit (काल) anzeigen*.

— उद् *hinaustreiben*: गा उत्कालयतु zur Erkl. von उदजताम् ÇAMK. zu Bhu. Ār. Up. 3, 1, 2. — उत्कालित PAÑĀT. 184, 18 *fehlerhaft für उत्कलित*.

— परि *herumtreiben, hetzen, verfolgen*: ततस्ते सक्ताः सर्वे तरुन्मक्षिषाम्भुगान् । गव्यर्तवराक्षेष्ट समतात्पर्यकालयन् ॥ MBh. 3, 14858. ये पुरा पर्यवोज्ञस्त तालवृक्षैर्वरिचयः । तं गृधाः पर्यवोज्ञस्त दावाग्निपरिकालितम् ॥ 15, 1060.

— प्र *vor sich hertreiben, verfolgen*: प्रवृद्धमारुह्य महीप्ररोहम् । प्रकालयन्नेव स पार्थिवौघान्क्रुद्धो ऽत्तकः प्राणभृते यथैव ॥ MBh. 1, 7178. प्रकाल्य तान्सर्वान् 4, 2240. प्रकाल्यमानस्तेनायं प्रूलक्ष्तेन रत्नसा । अग्न्यागारं प्रति द्वारि मया देश्या निवारितः ॥ 3, 10778. प्रकालयोदिशः सर्वाः प्रतोदेनेव सारथिः 2, 1932. *antreiben*: तं प्राकालयतैता गा ब्रह्मवन्ध इत्यब्रवीत् Kīṭu. in Ind. St. 3, 469.

— सम् *in die Flucht schlagen*: पत्नीन्सर्वानतिव्रजान्योत्स्यमानानवस्थितान् । एकः संकालयिष्यामि वज्रपाणिरिवामुरान् ॥ MBh. 4, 1981.

— अनुसम् *hinterhertreiben*: अनुसंकलयति गाम् ĀÇV. Gṛh. 4, 2.

कल 1) adj. f. a) *stumm, heiser*: यथा कला (Mādhj.-Rec.: कटा) श्रवदत्तो वाचा Bhu. Ār. Up. 6, 1, 8. KĀND. Up. 5, 1, 8. In comp. mit वाप्य, अश्रु — *vor Thränen nicht reden könnend, schluchzend*: नोचुर्वाप्यकलाः किंचिद्वीक्षन् चक्रुः परस्परम् MBh. 15, 301. येन संस्तम्भनीयो ऽयं सर्वो वाप्यकलो जनः R. 2, 34, 53. 32, 23. अश्रुकलाश्च मातरः 106, 33. vom Gesprochenen: in Folge von Thränen undeutlich, unverständlich: वाप्यकलया वाचा MBh. 3, 13177. N. 7, 13. 9, 25. R. 2, 82, 9. उवाच तौ वाप्यकलम् (adv.) MBh. 3, 10839. Auf einem Missverständniß der wahren Bed. von वाप्यकल beruht vielleicht im Buāg. P. der Gebrauch des f. वाप्यकला in der Bed. von *Thränenstrom*: मुचन्वाप्यकला मुहुः 3, 22, 25. सेरात्रश्रिया दशा वाप्यकलामुवाह 4, 8, 16. वाप्यकलाकुलाक्षी 4, 7, 45. धौतकाप्याश्रुकलान्तस्य 6, 17. कल in Verbindung mit अव्यक्त *undeutlich*: अव्यक्तकलवाक्यानि वदन्तम् MBh. 3, 17143. बालः कलमव्यक्तमब्रवीत् BRĀHMAN. 3, 21. Später *bed. käl schlechtweg einen feinen, leisen* (u. insofern *lieblichen*) *Ton von sich gebend*: धनौ तु मधुरास्फुटे । कलः AK. 1. 1, 2, 2. H. 1409. an. 2, 476. MED. I. 6 (lies नाव्यक्त d. i. ना श्रु. st. नाव्योक्त.). मदकलयति VIKR. 109. मदकलकोकिल 119. भास्वत्कलनूपुराणाम् — अभिसारिकाणाम् RAGH. 16, 12. कलकिङ्किणीरवम् Çiç. 9, 74. कलकाञ्चि 82. जगुः कलपदान्तरं गीतं मधुरभाषिण्यः R. 1, 9, 24. Buāg. P. 1, 8, 44. 2, 7, 33. कलालाप Vid. 14. जगुः कलं (adv.) च गन्धर्वः R. 1, 19, 10. 73, 35. नाद्यापि श्रूयते शब्दे मत्तानो मृगपतिणाम् । मुरत्ता मधुरा वाणी कलं व्याहृतं मुहुः ॥ 2, 71, 24. 3, 79, 21. Hit. I. 76. कलहंसानां स्वरेण कलभाषिणी R. 4, 29, 17. कोकिलकोकलीकलरव BHARTṚ. 1, 35. परभृतवृत्तं कलम् ÇĀK. 83. RAGH. 8, 58. R. 6, 21, 29. सारसैः कलनिर्हृदैः RAGH. 1, 41. शिखिकलकलकोकलरव BHARTṚ. 1, 42. SĀH. D. 16, 6. Vgl. उषाकल. — b) *unverdaut* H. an. 2, 476. MED. I. 6. — 2) m. a) (sc. स्वर) *ein lieblicher aber undeutlicher Ton* AK. u. s. w. — b) N. eines Baumes, *Shorea robusta* (साल), RĪGĀN. im ÇKDR. Vgl. कलकल. — c) m. pl. Bez. einer Art *Manen* MBh. 2, 463; vgl. सुकालाः HARIV. 983. — 3) n. a) *männlicher Samen* H. an. MED.; vgl. कलल. — b) *Judendorn* (s. कर्कन्धु) ÇABDAK. im ÇKDR.; vgl. कोला und कोलि. — Das f. कला s. weiter unten.

कलक 1) *ein best. Fisch* (s. शकुल) H. 1313. — 2) *eine best. Art Prosa* WILS.

1. कलकाण्ड (कल + क) m. *eine wohlklingende Stimme* H. an. 4. 66. MED. th. 17.